



बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
बाँदा - २१०००१ (उ०प्र०)
Banda University of Agriculture & Technology,
Banda- 210001 (U.P.)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 158 /2026)

Year: 8th

जिला: बाँदा

जारी करने की तिथि: 16.07.2026

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	शाक-भाजी	➤ समस्त सब्जियों की अल्प अवधि वाली प्रभेदों का उपयोग किया जाए। यथा भिंडी की काशी सहिष्णु, काशी पराक्रम, काशी उत्कर्ष, काशी लालिमा आदि, लोबिया में काशी निधि, काशी विशन, काशी श्यामल, काशी गौरी आदि, तरोंई में काशी श्रेया, काशी वंदना, काशी कल्याणी, के स्वादिष्ट हाइब्रिड तरोंई में काशी सौम्या, काशी रक्षिता आदि, सतपुतिया में काशी खुशी, लौकी ने काशी शुभ्रा, काशी कीर्ति आदि, कद्दू में काशी हरित, काशी बसंत आदि, करेला में काशी प्रतिष्ठा, काशी मयूरी आदि, खीरा में काशी नूतन, चौलाई में काशी चौलाई-१। ➤ मृदा नमी संरक्षण तथा खर पतवार नियंत्रण की दृष्टि से समस्त फसलों की बुआई मेड़ी पर या उठी हुई क्यारियों में पलवार का प्रयोग करके ही करें। लोबिया, भिंडी, बैंगन, टमाटर, मिर्च तथा कद्दू वर्गीय फसलों में काली पॉलीथिन अथवा सुखी घास की पलवार प्रयोग करें। कद्दू वर्गीय सब्जियों में तार झाड़ी अथवा पंडाल बनकर लताओं को ऊपर चढ़ने की व्यवस्था कर दें। ➤ फसलों को थ्रिप्स तथा सफेद मक्खी जैसे चूसक कीड़ों के प्रकोप से सुरक्षित रखने के लिए यथावश्यक उपयुक्त कीटनाशी का प्रयोग करें। ➤ वर्षा ऋतु, खरीफ हेतु टमाटर, बैंगन, मिर्च की तैयार पौध की रोपाई कर दें तथा खरीफ प्याज की पौधशाला तैयार कर लें। सीधी बोई जाने वाली फसलों की भी उपरोक्त सुझावों के अनुसार बुआई कर दें। बुआई से पहले प्रति किलो बीज में २ ग्राम कार्बेन्डाजिम अथवा कैप्टन मिलाकर बीजोपचार करें तथा सिंचाई के जल में प्रति लीटर २ ग्राम कार्बेन्डाजिम घोलकर ड्रेचिंग सिंचाई करें।
2-	शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन	शस्य-प्रबंधन ● जुलाई वर्षा का प्रधान माह है। मानसून की सक्रियता के कारण वातावरण का तापक्रम कम हो जाता है और सापेक्षिक आर्द्रता कम हो जाती है। खरीफ फसलों की बुआई और अन्य कृषि कार्यों के लिये जुलाई सबसे महत्वपूर्ण महीना है। ● अरहर की कम समय में पकने वाली किस्मों की बुआई जुलाई के प्रथम सप्ताह में करें। एक हेक्टेयर के लिये 18-20 किग्रा बीज की आवश्यकता पड़ती है। ● मूंग एवं उड़द की जल्दी तैयार होने वाली किस्म का चुनाव करें तथा मध्य जुलाई तक बुआई सम्पन्न करें। बुआई हमेशा कतारों में 30 सेमी की दूरी पर करें।

		- सभी दलहनी फसलों के बीज बुआई पूर्व उचित राइबोजियम कल्चर से अवश्य उपचार करें। - मध्य जुलाईतक तिल की बुआई करें। तिल की उन्नत किस्मों के प्रमाणित बीज बुआई करें। प्रति हेक्टेयर 5-7 किलो बीज दर से पर्याप्त होती है। - बुआई कतारों में 30 सेमी0 का फसला रखकर 2-3 सेमी0 की गहराई पर करें। पौधे से पौधे की बीच की दूरी स्थापित कर लेवें। - श्रीअन्न फसलों की बोआई यथाशीघ्र पूर्ण करें। बोआई हमेंशा अच्छे जल निकास वाली हल्की मृदाविन्यास वाली भूमि में करें। बुआई कतारों में 30 सेमी0 का फसला रखकर 2-3 सेमी0 की गहराई पर करें। पौधे से पौधे के बीच की दूरी 90 सेमी स्थापित कर लेवें। जहाँ तक संभव हो श्रीअन्न फसलों की बोआई 920 सेमी चौड़ाई के उठे हुए बीज सय्या पर करें। दो बीज सय्या के मध्य 30 सेमी गहरी नाली बनाना सुनिश्चित करें। - धान की सीधी बोआई एवं रोपित दोनों में खरपतवार निकलना /नियंत्रित करना सुनिश्चित करें। रोपित फसल में रोपाई के तुरंत बाद प्रेटीलाक्लोर नामक खरपतवार नाशी की 2 किग्रा मात्रा का प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें। दोनों प्रकार के धान में 3-4 सप्ताह की अवस्था पर बिस्पायरीबैक सोडियम नामक खरपतवार नाशी की 100 ग्राम मात्रा का प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें। ध्यान रहे छिड़काव हमेशा प्रयाप्त मृदा नमी की दशा में प्लैटफैन नोजल से करें। मृदा-प्रबंधन ➤ खरीफ में बोई जाने वाली दलहन फसलों में 20:60:20, तिलहन फसलों में 90:50:30 एवं धान में 80:60:40 किग्रा0 एनपीके प्रति हे0 प्रयोग करें। ➤ वर्षा के दौरान होने वाले मृदाक्षरण एवं मृदा कटाव को रोकने हेतु अपने – अपने खेतों का मेड बंधान लगातार करतें रहें। ➤ फासफोरस एवं पोटाष की पूरी मात्रा तथा नत्रजन की आधी मात्रा बुवाई के समय तथा नत्रजन की शेष मात्रा खडी फसल में प्रयोग करें। ➤ विगत में मिट्टी परीक्षण हेतु भेजे गये मृदा नमूना परीक्षण की रिपोर्ट एकत्र कर नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों से चर्चा कर खरीफ फसलों हेतु फसलानुसार उर्वरकों की व्यवस्था अभी तक अगर न की हो तो अविलम्ब करें। ➤ जो सब्जी फसलें अभी भी खेतों में हैं उनमें आवश्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें। ➤ बागवानी फसलों में पौधे की उम्र एवं आवश्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें।
3-	पशुपालन प्रबंधन	➤ वर्षा ऋतु के आगमन के साथ ही पशुओं में कई तरह के संक्रमण रोग जैसे खुरपका मुँहपका, लंगड़ी ज्वर गलधोटू चिकिन पॉक्स इत्यादि के संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है जिसका उपचार कर पाना पशुपालकों के लिए परेशानी का सबब होता है। इस कारण इन रोगों से बचाने के लिए टीकाकरण का कार्य प्रमुखता के साथ वर्षा शुरू होने से पहले कराया जाना अति

		आवश्यक है। अतः जिन पशुपालको ने अपने पशुओं में टीकाकरण नहीं कराया है वे सभी पशुपालक उपरोक्त बीमारियों से बचाव हेतु टीकाकरण पशुपालन विभाग के सहयोग से अवश्य करायें। ➤ इसके साथ ही पशुपालक ध्यान दे कि वर्षा ऋतु में पशुओं के बैठने के स्थान में सूखा रखना आवश्यक है गीले स्थानों पर पशुओं को बाँधनेसे कई जीवाणु जनित रोगों के फैलने का खतरा होता है। अतः पशुपालक नवजात व दुधारू पशुओं को सूखे व छायादार स्थान पर ही बाँधे। ➤ हरे चारे की उपलब्धता से दुधारू पशुओं की भोज्य व्यवस्था को सुदृढ़ व पशुओं के पोषण पर होने वाले खर्च को भी कम किया जा सकता है। इसलिए इस समय पशुपालक व किसानबन्धु हरे चारे की फसलो मक्का, बाजरा, एम.पी. चरी, ज्वार नेपियर, घास इत्यादि की बुवाई कर सकते हैं। जिससे पशुओं को हरे चारे की उपलब्धता बनी रहे।
4-	कीट-प्रबंधन	➤ खड़ी फसलों तथा सब्जियों में नीम तेल @ 5 मिली प्रति ली पानी के घोल का छिड़काव करें इससे उपचारित खेतों को टिड्डियां कम नुकसान करती हैं। ➤ धान की नर्सरी में कीट के नियंत्रण हेतु फसल की साप्ताहिक निगरानी करना चाहिये एवं आवश्यकतानुसार नीम तेल @ 5 मिली प्रति ली पानी के घोल का छिड़काव करें। ➤ सब्जियों की फसलों में रस चूसने वाले व फल बेधक कीट के जैविक नियंत्रण हेतु एजाडिरैक्टिन 0.15 प्रतिशत ई0सी0 2.5 लीटर मात्रा को 500-600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से छिड़काव करें अथवा चार प्रतिशत नीम गिरी एवं 0.5 मिली0 लीटर स्टिकर (चिपकने वाला पदार्थ) प्रति लीटर पानी के साथ मिलाकर छिड़कने से जैसिड, सफेद मक्खी व मिली बग का प्रकोप कम हो जाता है।
5-	पादप रोग प्रबंधन	➤
6.	बागवानी प्रबंधन	बागवानी वाली फसलों में अनेक कृषि कार्य जुलाई महीने में किये जाते हैं जैसे-फलदार पौधों की रोपाई, मूलवृन्त तैयार करने के लिए फल बीज की नर्सरी में बुवाई, जल निकास की व्यवस्था, खाद एवं उर्वरक प्रबंधन, खरपतवार प्रबंधन, अन्तरवर्ती फसलों की बुवाई, जल निकास की व्यवस्था, फल पौधों में कटिंग, कलम चढ़ाना, बारिश में लगने वाले प्रमुख कीट एवं रोग प्रबंधन इत्यादि कार्य किये जाते हैं कुछ सामान्य ध्यान देने वाली बातें ➤ फलदार वृक्ष जैसे आम, अमरुद, निम्बू, अनार, बेर, बेल, इमली इत्यादि के पौधों के रोपाई का कार्य किसान भाई अवश्य शुरू कर दें।

		➤ किसान भाई पौध लगाने से पहले प्रत्येक गढ़दे की मिटटी में में २०-२५ किलोग्राम सड़ी गोबर की खाद एवं एक किलोग्राम सुपर फास्फेट अवस्य दाल दे। ➤ गुणवत्ता युक्त पौध तैयार करने के लिए मूलवृन्त की आवश्यकता होती है जिसके लिए फलों के बीज की बुवाई नर्सरी में अवस्य कर दें। ➤ अत्याधिक वर्षा के नुकसान से बचाने के लिए फल बागानों में सिचाई के लिए बनाई गई नालियों को जल निकास के काम में लेना चाहिए। ➤ पोषक तत्व प्रबंधन के अंतर्गत छोटे फल पौधों में ५० ग्राम नत्रजन प्रति पौधा आयु के हिसाब से देना चाहिए। ➤ फल देने वाले पौधों को जिंक सल्फेट (200 ग्राम/पौधा) तथा बोरॉन (100 ग्राम /पौधा) देना चाहिए। आम में मुख्य कृषि कार्य ➤ आम के संस्तुत पूरी खाद एंड आधी उर्वरक की मात्रा का प्रयोग करें। ➤ नए बाग लगाने हेतु पौध रोपाई का कार्य प्रारम्भ करे। ➤ आम में गूटी बांधे। ➤ आम में कलम बांधने का कार्य किसान भाई शुरू कर दे। ➤ मूलवृन्त तैयार करने के लिए आम के गुठलियों का रोपण नर्सरी में करना चाहिए। फलों में मुख्य कृषि कार्य ➤ नींबू सन्तरा एवं मौसम्बी के प्रत्येक पौधे को 20-30 किलोग्राम सड़ी गोबर के खाद, 1-2 किलोग्राम यूरिया, 1-2 किलोग्राम सिंगल सुपर फास्फेट तथा 0.5 - 0.6 किलोग्राम म्यूरेंट ऑफ पोटाश प्रति वर्ष देना चाहिए। ➤ नींबू में गूटी बांधने का कार्य करे। ➤ सन्तरे एवं मौसम्बी में कलिकायन चढ़ाने का कार्य करें। ➤ पपीते में पित्त शिरा मौजैक विषाणु के नियंत्रण हेतु पौधों के छोटी अवस्था में ही विषाणु को फैलाने वाले कीटों (एफिड) का नियंत्रण एमिडाक्लोरोप्रिड (0.5 मिलीध्लीटर पानी) के छिड़काव से करें। ➤ पौध तैयार करने के लिए नर्सरी में उन्नतशील किस्मों के बीज जैसे- रेड लेडी, ताइवान, पूसा नन्हा, अर्का प्रभात इत्यादि के बीज के बुवाई करें। ➤ अमरुद में गुटी एवं परस्पर सम्बन्ध विधि से पौध तैयार करने का कार्य करें। ➤ नए बाग का रोपण करते समय उन्नतशील प्रजातिओं जैसे - लखनऊ-49, संगम, श्वेता, ललित, इत्यादि चयन करें। ➤ काली फफूद के प्रकोप से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत घुलनशील गंधक का छिड़काव करें। ➤ जुलाई माह में उन्नतशील प्रजातियों जैसे- चकैया, कंचन, कृष्णा, बनारसी इत्यादि का रोपण करें। ➤ नए पौध बनाने के लिए कलिकायन चढ़ाने का कार्य करें। ➤ पूर्व में तैयार गढ़दों में पौध रोपण करें। ➤ छोटे बागों के बीच में हरी खाद हेतु ढैचा, सनई इत्यादि की बुवाई करें। ➤ नए पौध तैयार करने के लिए रूपांतरित छल्ला कलिकायन विधि का प्रयोग करें।
7.	वानिकी प्रबंधन	पौधों की ग्रेडिंग (विक्रय हेतु) • बिक्री से पहले पौधों की लंबाई (ऊँचाई) एवं तने की मोटाई (कॉलर डायमीटर) के आधार पर ग्रेडिंग अवस्य करें।

		● ग्रेड 'I' – अधिक ऊँचाई, सीधा तना, अच्छी जड़ें, मोटा तना (बेहतर दाम)। ● ग्रेड 'ठ' – मध्यम आकार, कुछ कमजोर जड़, स्थानीय उपयोग हेतु। ● खराब/रोगग्रस्त पौधे – अलग करें (जलाएँ या नष्ट करें, जिससे रोग न फैले)। ● मजबूत, रोगमुक्त एवं सुपाच्य जड़-प्रणाली वाले पौधे ही रोपण हेतु चुनें। पौध सामग्री ● बुंदेलखंड की जलवायु को देखते हुए, आगामी वर्ष के रोपण हेतु पौध तैयार करने के लिए जामुन, नीम, लाल चंदन, रोज़वुड, शीशम, महुआ, मालाबार नीम महुआ, आम, करौंदा, कटहल, कचनार, चिरौंजी, अमलतास, पलास, गुलमोहर, कैजुरिना व नीम जैसी प्रजातियों की बुआई जुलाई माह कर लें। ● जिन प्रजातियों के बीजों का छिलका कठोर होता है (जैसे – शीशम, अमलतास, पलास, गुलमोहर) और जो देर से अंकुरित होते हैं, उन्हें बोने से पहले रातभर (लगभग 12–18 घंटे) पानी में भिगोना अत्यंत आवश्यक है – इससे बीज की सुप्तावस्था (डॉर्मेसी) टूटती है और अंकुरण प्रतिशत बढ़ता है। जुलाई – वृक्षारोपण का सही समय ● अच्छी वर्षा (कम से कम 3–4 दिन लगातार बारिश) के बाद ही वृक्षारोपण शुरू करें – जलभराव से बचें, लेकिन नम मिट्टी में रोपण करें। ➤ रोपण के लिए गड्ढे (1 फीट x 1 फीट x 1 फीट) पहले से खोदें और उसमें गोबर की खाद + नीम केक + ट्राइकोडर्मा मिलाएँ ताकि जड़ें जल्दी विकसित हों।
--	--	---

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल-

1. डॉ जी. एस. पंवार 2. डॉ दिनेश साह 3. डॉ ए.सी. मिश्रा 4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव 5. डॉ राकेश पाण्डेय 6. डॉ मयंक दुबे	7. डॉ दिनेश गुप्ता 8. डॉ पंकज कुमार ओझा 9. डॉ सुभाष चंद्र सिंह 10. डॉ जगन्नाथ पाठक 11. डॉ धर्मेन्द्र कुमार
--	--